

पैनियम - संख्या चौदह

मंदिर-परीक्षा की कुंजी के रूप में निराशा

Jeff Pippenger

2026-02-18

पवित्रस्थान का विषय वह "कुंजी" था, जिसने तीसरे स्वर्गदूत के संदेश के आरम्भ में 22 अक्टूबर, 1844 की निराशा का रहस्य खोल दिया; और तीसरे स्वर्गदूत के संदेश के अंत में मंदिर-परीक्षा के पवित्रस्थान-संदेश का रहस्य खोलने की "कुंजी" निराशा का विषय ही है।

और मैं तुझे स्वर्ग के राज्य की कुंजियाँ दूँगा; और जो कुछ तू पृथ्वी पर बाँधेगा, वह स्वर्ग में बाँधा जाएगा; और जो कुछ तू पृथ्वी पर खोलेगा, वह स्वर्ग में खोला जाएगा। मत्ती 16:19.

यह तथ्य कि 11 सितम्बर 2001 को "9/11" के रूप में समझा जाता है—जो संयुक्त राज्य में आपातकालीन कॉल के प्रतीक "911" के अनुरूप है—उसी एक की अभिकल्पना थी जिसने सब कुछ अभिकल्पित किया। 18 जुलाई 2020 की निराशा की समझ ही वह बात है जो एक लाख चवालीस हज़ार के आंदोलन को उसी रूप में पहचाने जाने योग्य बनाती है; परन्तु केवल उनके लिए जो यह देखना चाहते हैं कि यीशु आज भी प्राकृतिक के माध्यम से आध्यात्मिक का निरूपण वैसा ही करते हैं जैसा उन्होंने दो हज़ार वर्ष पूर्व किया था। "20/20" दृष्टि मनुष्य के लिए उपलब्ध सर्वोत्तम दृष्टि है, और 2020 की निराशा वह मार्गचिह्न है जो दस कुँवारियों के भविष्यसूचक इतिहास में मन्दिर को पहचाने जाने की अनुमति देता है।

"मत्ती 25 की दस कुँवारियों का दृष्टान्त भी ऐडवेंटिस्ट लोगों के अनुभव को चित्रित करता है।" द ग्रेट कॉन्ट्रोवर्सी, 393.

जब 20/20 दृष्टि का संयोग आधारभूत सत्यों द्वारा निरूपित पञ्चदृष्टि से होता है, तो वह और भी उत्तम सिद्ध होती है। पौलुस सिखाता है कि, 'भविष्यवक्ताओं की आत्माएँ भविष्यवक्ताओं की आत्माओं के अधीन होती हैं'; अतः मत्ती की कुँवारी कन्याएँ वही कुँवारियाँ हैं जिन्हें यूहन्ना एक लाख चवालीस हज़ार के रूप में पहचानता है, और यूहन्ना उन्हें प्रकाशितवाक्य 144 में 'कुँवारियाँ' कहकर पहचानता है।

ये वे हैं जिन्होंने स्त्रियों के साथ अपने आप को अशुद्ध नहीं किया, क्योंकि वे कुँवारे हैं। ये वे हैं जो जहाँ कहीं मेम्ना जाता है, उसके पीछे-पीछे चलते हैं। ये मनुष्यों में से छुड़ाए गए हैं, और ये परमेश्वर और मेम्ने के लिये प्रथम फल हैं। प्रकाशितवाक्य 14:4.

शरद ऋतु के पहिलौठे फल वे कुँवारे हैं, जो मेमेंने के पीछे-पीछे मन्दिर में प्रवेश करते हैं, और मन्दिर को समझने की "कुंजी" सन् 2020 की निराशा है।

और दाऊद के घर की कुंजी मैं उसके कंधे पर रखूँगा; तब वह खोलेगा, और कोई बंद नहीं करेगा; और वह बंद करेगा, और कोई खोलेगा नहीं। यशायाह 22:22.

यदि किसी ऐडवेंटिस्ट को एक लाख चवालीस हज़ार में गिना जाना है, तो प्रवाचकीय अनिवार्यता के अनुसार उसने ऐसी निराशा झेली होगी जो असफल सिद्ध हुई एक सार्वजनिक भविष्यवाणी की घोषणा के कारण हुई थी।

"मेरा ध्यान प्रायः दस कुँवारियों के दृष्टान्त की ओर दिलाया जाता है, जिनमें से पाँच बुद्धिमान थीं, और पाँच मूर्ख। यह दृष्टान्त अक्षरशः पूरा हुआ है और होगा, क्योंकि इसका इस समय के लिए एक विशेष अनुप्रयोग है, और तीसरे स्वर्गदूत के संदेश के समान, यह पूरा हुआ है और समय के अंत तक वर्तमान सत्य बना रहेगा।" Review and Herald, August 19, 1890.

दानिय्येल अध्याय ग्यारह के पंद्रहवें पद में वर्णित पनियम का युद्ध वही युद्ध है जो सोलहवें पद की ओर ले जाता है; और सोलहवाँ पद संयुक्त राज्य अमेरिका में रविवार के कानून को चिह्नित करता है।

तब उत्तर का राजा आएगा, और घेराबंदी का टीला बनाएगा, और सबसे दृढ़ गढ़वाले नगरों को ले लेगा; और दक्षिण की भुजाएँ उसका सामना न कर सकेंगी, न उसके चुने हुए लोग; और विरोध करने की कोई शक्ति न रहेगी। दानिय्येल 11:15.

इस पद में संयुक्त राज्य रूस को, और रूस की चुनी हुई प्रजा को भी, पराजित करता है। परन्तु अगले पद में, रोम के उदय के विरुद्ध कोई ठहर नहीं सकता; जो विश्व-विजय के अपने प्रथम चरण के रूप में यहूदा और यरूशलेम को चिह्नित करता है, क्योंकि रोम बाइबल की भविष्यवाणी के चौथे राज्य के रूप में उदित हुआ। पद सोलह में शाब्दिक महिमामय भूमि में खड़े होने के द्वारा, शाब्दिक रोम के प्राधिकार का प्रतीक उसी शाब्दिक महिमामय भूमि के भीतर था; और इस प्रकार, यह पद इकतालीस का पूर्वरूप प्रस्तुत करता है, जब आध्यात्मिक रोम के प्राधिकार का चिह्न संयुक्त राज्य की आध्यात्मिक महिमामय भूमि पर बलपूर्वक लागू किया जाता है।

प्रकाशितवाक्य अध्याय तेरह के पृथ्वी से निकलने वाले पशु के दो सींग गणतंत्रवाद और प्रोटेस्टेंटवाद का प्रतिनिधित्व करते हैं। दानिय्येल ग्यारह के पद पंद्रह में एंटीओकस मैगनस—जिसे एंटीओकस तृतीय और एंटीओकस महान के नाम से भी जाना जाता है—दक्षिणी राज्य को, जो प्टोलेमिक वंश द्वारा निरूपित है, पराजित करता है। एंटीओकस डोनाल्ड ट्रम्प का प्रतिनिधित्व करता है और दक्षिण का राजा रूस का। पानियम का युद्ध संयुक्त राज्य अमेरिका और रूस तथा रूस की चुनी हुई प्रजा के बीच का युद्ध है, एक ऐसा युद्ध जिसमें एंटीओकस विजयी रहा, परंतु इसके बाद उसके राज्य को वास्तविक रोम—पद चौदह की वह शक्ति—ने जीत लिया, जो पृथ्वी से निकलने वाले पशु के गणतंत्रवादी सींग की बाह्य दृष्टि की स्थापना करती है। आंतरिक दृष्टि पृथ्वी से निकलने वाले उसी पशु के प्रोटेस्टेंट सींग द्वारा निरूपित होती है। दोनों सींग पानियम के युद्ध में हैं, क्योंकि पतरस वहाँ योएल की पुस्तक से अपने संदेश के साथ एक प्रोटेस्टेंट के रूप में उपस्थित है।

दो सौ पचास वर्ष

जब हम पृथ्वी-पशु की दो रेखाओं पर विचार करते हैं, तो हम पाते हैं कि 1776 में पृथ्वी-पशु ने अपना उदय आरम्भ किया, और 1798 तक (बाईस वर्ष बाद) प्रकाशितवाक्य तेरह का समुद्र-पशु अपना घातक घाव प्राप्त कर चुका था, तथा पृथ्वी-पशु ने बाइबल की भविष्यवाणी के छठे राज्य के रूप में अपना शासन आरम्भ कर दिया। दो सौ पचास वर्ष बाद, 2026 में, हमें उस आंतरिक मंदिर की परीक्षा का बोध हुआ जो 8 मई, 2025 को आरम्भ हुई।

वे '250' वर्ष अन्तियोकस महान से भी संबद्ध हैं। ईसा पूर्व 457 में दिए गए आदेश से आरम्भ करके, और उस आदेश से दो सौ पचास वर्ष आगे बढ़ाने पर, हम 207 पर पहुँचते हैं—पानियम के युद्ध से सात वर्ष पहले, और राफ्रिया के युद्ध में प्टोलेमी द्वारा अन्तियोकस को पराजित करने के दस वर्ष बाद—जिसका निरूपण दानिय्येल 11 के पद 11 में किया गया है। दानिय्येल 11:11 निःसंदेह गणतांत्रिक सींग की बाह्य रेखा है, जो प्रकाशितवाक्य 11:11 के साथ समरेखित है; और प्रकाशितवाक्य 11:11 प्रोटेस्टेंट सींग की आंतरिक रेखा है। दानिय्येल और प्रकाशितवाक्य एक ही ग्रंथ हैं, और प्रकाशितवाक्य बाह्य भविष्यवाणी के प्रतीकों के रूप में मुहरों का, तथा समानांतर आंतरिक भविष्यवाणी के प्रतीकों के रूप में कलीसियाओं का उपयोग करता है।

कुरुश तीनों फ़रमानों का प्रतिनिधित्व करता है, क्योंकि प्रथम और द्वितीय के बिना तृतीय हो ही नहीं सकता।

“एज्रा के सातवें अध्याय में वह आज्ञा पाई जाती है। पद 12-26। अपने सर्वाधिक पूर्ण रूप में वह फ़ारस के राजा अर्तक्षत्र द्वारा, 457 ईसा पूर्व में, जारी की गई थी। परन्तु एज्रा 6:14 में कहा गया है कि यरूशलेम में यहोवा का भवन ‘कुरुश, और दारयवेश, और फ़ारस के राजा अर्तक्षत्र की आज्ञा [“डिक्री,” हाशिया] के अनुसार’ बनाया गया था। इन तीन राजाओं ने, उस आज्ञा का प्रारम्भ करके, उसकी पुनः पुष्टि करके, और उसे पूर्ण करके, उसे उस परिपूर्णता तक पहुँचाया जिसकी भविष्यवाणी के अनुसार 2300 वर्षों के आरम्भ को चिह्नित

करने के लिए आवश्यकता थी। 457 ईसा पूर्व को, अर्थात् वह समय जब आज्ञापति पूर्ण हुई, उस आज्ञा की तिथि मानने पर, सत्तर सप्ताहों के विषय में भविष्यवाणी की प्रत्येक विशिष्टता के पूर्ण होने का देखा गया।" — The Great Controversy, 326.

457 ईसा-पूर्व में कुरुश द्वारा निरूपित तीन फ़रमानों से प्रारम्भ करके, "250" वर्ष 217 ईसा-पूर्व की राफ़िया की लड़ाई—जब टॉलेमी चतुर्थ ने अन्तियोकुस महान को पराजित किया—और 200 ईसा-पूर्व—जब अन्तियोकुस ने तब पद पंद्रह में पानियम के युद्ध में टॉलेमी को पराजित किया—के बीच की इतिहासावधि में समाप्त होते हैं। यह रेखा अन्तियोकुस मैग्नस को डोनाल्ड ट्रम्प के साथ संरेखित करती है। बाइबिलीय भविष्यवाणी के छठे राज्य के आरम्भ में, 1776 से 1798 तक, "22" वर्षों की एक अवधि है जो छठे राज्य के उदय का प्रतिनिधित्व करती है। वे "22" वर्ष 2001 से 2023 तक छठे राज्य के इतिहास के अंत में "22" संख्या से निरूपित इतिहास का भी चित्रण करते हैं। "22" दिव्यता और मानवता के संयोजन का प्रतीक है, जो बाइबिलीय भविष्यवाणी के छठे राज्य के इतिहास के भीतर सम्पन्न होता है; वह छठा राज्य पृथ्वी का पशु है, जिसके पास गणतंत्रवाद का बाह्य शृंग और प्रोटेस्टेंटवाद का आन्तरिक शृंग है।

'22' द्वारा निरूपित संयुक्ति के साथ मसीह जो कार्य सिद्ध करते हैं, वही परमपवित्र स्थान में मसीह का अंतिम कार्य है, जिसे पापों के मिटाए जाने द्वारा निरूपित किया गया है, जो योएल के अनुसार, और पतरस की आत्मा-प्रेरित व्याख्या के साथ, पिछली वर्षा के उंडेले जाने के समय घटित होता है।

अतएव पश्चात्ताप करो, और परिवर्तित हो जाओ, ताकि तुम्हारे पाप मिटाए जाएँ, जब प्रभु की उपस्थिति से विश्रान्ति के समय आएँगे। प्रेरितों के काम 3:19.

पाप का मिटाना स्वर्गीय महायाजक का अन्तिम कार्य है।

जैसे प्राचीनकाल में लोगों के पापों को विश्वास के द्वारा पापबलि पर आरोपित किया जाता था और उसके लहू के द्वारा, प्रतीकतः, स्थलीय पवित्रस्थान में स्थानांतरित कर दिए जाते थे, वैसे ही नई वाचा में पश्चात्तापियों के पाप विश्वास के द्वारा मसीह पर आरोपित किए जाते हैं और वास्तव में स्वर्गीय पवित्रस्थान में स्थानांतरित कर दिए जाते हैं। और जैसे स्थलीय की प्रतीकात्मक शुद्धि उन पापों को हटाने के द्वारा संपन्न की जाती थी जिनसे वह कलुषित हुआ था, वैसे ही स्वर्गीय की वास्तविक शुद्धि वहाँ अभिलेखित पापों को हटाने, अथवा उनका लोप करने, के द्वारा संपन्न की जानी है। परंतु इससे पूर्व कि यह संपन्न हो सके, यह निर्धारित करने के लिए कि कौन, पापों के पश्चात्ताप और मसीह पर विश्वास के द्वारा, उसके प्रायश्चित्त के लाभों के अधिकारी हैं, अभिलेख-पुस्तकों की जांच आवश्यक है। अतएव पवित्रस्थान की शुद्धि में जांच का कार्य—न्याय का कार्य—निहित है। यह कार्य मसीह के अपने लोगों को छुड़ाने के लिए आने से पूर्व किया जाना चाहिए; क्योंकि जब वह आता है, तो उसका प्रतिफल उसके साथ होता है, ताकि वह प्रत्येक को उसके कर्मों के अनुसार दे। प्रकाशितवाक्य 22:12। महान विवाद, 421.

22 अक्टूबर, 1844 को जो कार्य आरम्भ हुआ, वह 'मध्यरात्रि के आह्वान' की पराकाष्ठा पर आरम्भ हुआ, और वही कार्य 'मध्यरात्रि के आह्वान' की पराकाष्ठा पर ही पूर्ण होता है, जिसे पतरस 'पाप के मिटाए जाने का काल' के रूप में पहचानता है, जो 'जीवितों के न्याय' के काल को चिह्नित करता है, जब 'ताज़गी के समय' आते हैं।

"अन्वेषणात्मक न्याय का कार्य और पापों का मिटाया जाना प्रभु के द्वितीय आगमन से पहले सम्पन्न होना है। क्योंकि मृतकों का न्याय पुस्तकों में लिखी बातों के अनुसार किया जाना है, इसलिए जब तक वह न्याय न हो जाए जिसमें उनके मामलों की जाँच की जानी है, तब तक मनुष्यों के पापों का मिटाया जाना असम्भव है। परन्तु प्रेरित पतरस स्पष्ट रूप से कहते हैं कि विश्वासियों के पाप उस समय मिटाए जाएँगे, 'जब प्रभु के साम्हने से विश्रान्ति के समय आएँगे; और वह यीशु मसीह को भेजेगा।' प्रेरितों के काम 3:19, 20। जब अन्वेषणात्मक न्याय समाप्त होगा, तब मसीह आएगा, और उसका प्रतिफल उसके साथ होगा, कि वह हर एक को उसके कर्म के अनुसार दे।" महान संघर्ष, 485.

"शीतलता के काल" भी "समस्त वस्तुओं की पुनर्स्थापना के काल" हैं।

अतएव तुम मन फिराओ, और परिवर्तित हो जाओ, कि तुम्हारे पाप मिटाए जाएँ, जब प्रभु की उपस्थिति से नवस्फूर्ति के समय आएँ; और वह उस यीशु मसीह को भेजेगा, जिसके विषय में पहले तुम्हें प्रचार किया गया था: जिसे आकाश को उस समय तक अपने पास रखना अवश्य है, जब तक कि सब वस्तुओं की पुनर्स्थापना के समय न आ जाएँ, जिसके विषय में परमेश्वर ने जगत के आदि से अपने सब पवित्र भविष्यद्वक्ताओं के मुख से कहा है। प्रेरितों के काम 3:19-21.

"ताज़गी के समय" "प्रभु की उपस्थिति से" आते हैं; वे तब घटित होते हैं जब "यीशु मसीह" को भेजा जाता है। जब 11 अगस्त, 1840 को प्रकाशितवाक्य दस का स्वर्गदूत अवतरित हुआ, तो बहन व्हाइट ने यह पहचाना कि वह स्वर्गदूत "यीशु मसीह से कम कोई व्यक्तित्व नहीं था"। 22 अक्टूबर, 1844 को मसीह ने जो कार्य आरम्भ किया, उसका उद्घाटन 1840 से 1844 के इतिहास द्वारा हुआ; ऐसा इतिहास, जिसे बहन व्हाइट "परमेश्वर की शक्ति का एक महिमामय प्रगटीकरण" कहती हैं, और उसी इतिहास को वह पतरस के समय के पेंतेकोस्तीय काल के साथ समांतर रखती हैं, और फिर उन्हीं दो भविष्यद्वक्ता-इतिहास की रेखाओं का उपयोग करके प्रकाशितवाक्य अठारह के उस स्वर्गदूत के अवतरण की ओर संकेत करती हैं, जो अपनी महिमा से पृथ्वी को ज्योतिर्मय करता है।

"वह स्वर्गदूत जो तीसरे स्वर्गदूत के संदेश की घोषणा में सम्मिलित होता है, अपनी महिमा से सारी पृथ्वी को आलोकित करने वाला है। यहाँ एक ऐसे कार्य की भविष्यवाणी की गई है जिसका विस्तार विश्वव्यापी और शक्ति असाधारण होगी। 1840-44 का आगमन आंदोलन परमेश्वर की सामर्थ्य का एक गौरवपूर्ण प्रकटिकरण था; पहले स्वर्गदूत का संदेश संसार के प्रत्येक मिशनरी केंद्र तक पहुँचाया गया, और कुछ देशों में ऐसा महानतम धार्मिक जागरण देखा गया, जैसा सोलहवीं शताब्दी के धर्म-सुधार के बाद से किसी भी देश में नहीं देखा गया था; परन्तु इन सब से भी बढ़कर वह प्रबल आंदोलन होगा जो तीसरे स्वर्गदूत की अंतिम चेतावनी के अधीन उत्पन्न होगा।"

"यह कार्य पिन्तेकुस्त के दिन के कार्य के समान होगा। जैसे 'पहली वर्षा' सुसमाचार के प्रारम्भ में पवित्र आत्मा के उंडेले जाने में दी गई थी, ताकि बहुमूल्य बीज का अंकुरण हो, वैसे ही 'पिछली वर्षा' उसके समापन पर फसल के पकने के लिए दी जाएगी। 'तब हम जानेंगे, यदि हम यहोवा को जानने के लिये लगे रहें; उसका प्रगट होना भोर के समान निश्चित है; और वह हमारे पास वर्षा के समान आएगा, पृथ्वी पर पड़नेवाली पिछली और पहली वर्षा के समान।' होशे 6:3। 'हे सिव्योन की सन्तानो, मगन हो, और अपने परमेश्वर यहोवा में आनन्दित रहो; क्योंकि उसने तुम्हें पहली वर्षा उचित परिमाण में दी है, और वह तुम्हारे लिये वर्षा बरसाएगा, अर्थात् पहली वर्षा और पिछली वर्षा।' योएल 2:23। 'अन्तिम दिनों में, परमेश्वर कहता है, कि मैं अपना आत्मा सब प्राणियों पर उंडेलूँगा।' 'और ऐसा होगा कि जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वह उद्धार पाएगा।' प्रेरितों के काम 2:17, 21।"

सुसमाचार का महान कार्य इस प्रकार समाप्त नहीं होगा कि परमेश्वर की शक्ति का प्रगटीकरण उसके आरंभ में जितना था, उससे कम हो। सुसमाचार के आरंभ में 'पूर्व वर्षा' के उंडेले जाने में जो भविष्यवाणियाँ पूरी हुई थीं, वे उसके अंत में 'अंतिम वर्षा' में फिर से पूरी होंगी। यही वे 'ताज़गी के समय' हैं, जिनकी ओर प्रेरित पतरस ने दृष्टि रखी, जब उसने कहा: 'इस कारण मन फिराओ और परिवर्तित हो जाओ, ताकि तुम्हारे पाप मिटाए जाएँ, जब प्रभु की उपस्थिति से ताज़गी के समय आएँगे; और वह यीशु को भेजेगा।' प्रेरितों के काम 3:19, 20। महान विवाद, 611।

1840 से 1844 का आगमन आंदोलन परमेश्वर की शक्ति का एक महिमामय प्रगटीकरण था, जिसने उसके पवित्रस्थान की शुद्धि में मसीह के कार्य के उद्घाटन का मार्ग प्रशस्त किया। वह इतिहास तब आरम्भ हुआ जब यीशु—जिन्हें प्रकाशितवाक्य अध्याय चौदह के प्रथम स्वर्गदूत के रूप में निरूपित किया गया है—11 अगस्त, 1840 को, जैसा कि प्रकाशितवाक्य अध्याय दस में दर्शाया गया है, उतर आए। तब जो परमेश्वर की शक्ति का प्रगटीकरण आरम्भ हुआ, वह प्रबलित होकर अन्वेषण न्याय के उद्घाटन तक पहुँचा; और इस प्रकार उसने परमेश्वर की शक्ति के उस प्रगटीकरण का प्रतिरूप ठहराया जो अन्वेषण न्याय की समाप्ति तक प्रबलित होगा। अंत का वह काल 9/11 को

आरम्भ हुआ, जब यीशु फिर से प्रकाशितवाक्य अध्याय अठारह के स्वर्गदूत के रूप में उतर आए, जब न्यूयॉर्क की महान इमारतें परमेश्वर के स्पर्श से धराशायी कर दी गईं, और अन्वेषण न्याय का कार्य मरे हुएों से जीवितों की ओर स्थानांतरित हो गया। वर्षाएँ तब आती हैं जब यीशु प्रेषित किए जाते हैं।

यीशु ने यह सिखाया कि हमें पाने के लिए माँगना चाहिए, और जकर्याह कहता है कि अन्तिम वर्षा के समय हमें अन्तिम वर्षा माँगनी चाहिए। अतः यह स्पष्ट है कि जकर्याह के निर्देश की पूर्ति के लिए आपको यह जानना आवश्यक है कि आप अन्तिम वर्षा के समय में हैं।

अन्तिम वर्षा के समय यहोवा से वर्षा मांगो; तब यहोवा चमकती घटाएँ बना देगा, और उन्हें वर्षा की बौछारें देगा, और प्रत्येक जन के लिये खेत में घास उत्पन्न करेगा। जकर्याह 10:1.

9/11 पर यीशु 'प्रकाशितवाक्य अध्याय अठारह' के स्वर्गदूत के रूप में उतरे, और अन्तिम वर्षा की बौछारें पड़ने लगीं; परन्तु वह केवल उन पर गिरती है जो जकर्याह की इस आज्ञा का पालन करते हैं कि "अन्तिम वर्षा के लिए माँगो", और यह तभी होता है जब उनके पास यह यथार्थ बोध हो कि "ताज़गी के समय" और सब वस्तुओं की पुनर्स्थापना आ पहुँची है। आत्मा को यह "पहचानना" आवश्यक है कि अन्तिम वर्षा का भविष्यसूचक काल आ पहुँचा है।

हमें अंतिम वर्षा की प्रतीक्षा नहीं करनी चाहिए। यह उन सब पर आने वाली है जो हम पर गिरने वाली अनुग्रह की ओस और फुहारों को पहचानेंगे और अपनाएँगे। जब हम प्रकाश की झलकियाँ समेट लेते हैं, जब हम परमेश्वर की निश्चित दयाओं की कद्र करते हैं, जो यह चाहता है कि हम उस पर भरोसा करें, तब हर प्रतिज्ञा पूरी होगी। [यशायाह 61:11 उद्धृत.] सम्पूर्ण पृथ्वी परमेश्वर की महिमा से भर दी जाएगी। दि सेवेंथ-डे एडवेंटिस्ट बाइबल कमेंटरी, खंड 7, 984.

9/11 को ताज़गी के समय आरम्भ हुए, और जीवितों के पापों का मिटाया जाना आरम्भ हुआ। वह न्याय अब्राहम की तीन-चरणीय वाचा के सर्वप्रथम सिद्धान्त के अनुरूप है। वह प्रथम सिद्धान्त यह था कि प्रभु इस्राएल को मिस्री दासत्व से बाहर निकालते समय अपने वाचा-जन के साथ-साथ उस राष्ट्र का भी न्याय करेगा, जहाँ वे परदेसी और अजनबी के रूप में रहते आए थे। प्रथम वाचा-जन अंतिम वाचा-जन के प्रतिरूप थे, जो एक लाख चवालीस हज़ार हैं। वे भविष्यवाणीपरक लोग पृथ्वी से निकलनेवाले पशु के प्रोटेस्टेंट सींग के रूप में न्याय किए जाएंगे, और उसी समय पृथ्वी से निकलनेवाले पशु के रिपब्लिकन सींग का भी न्याय होगा।

गणतांत्रिक सींग का न्याय उसके इतिहास के अंत में होता है, जो कि रविवार का कानून है। रविवार का कानून पद सोलह की उस पूर्ति में निरूपित है, जिसमें 63 ईसा-पूर्व में रोम ने यहूदा पर अधिकार कर लिया—कुछ इतिहासकारों के अनुसार, यह प्रायश्चित्त-दिवस पर हुआ।

एंटियोकस मैग्नस, पद दस से पंद्रह में संयुक्त राज्य अमेरिका का प्रतिनिधित्व करता है। रोनाल्ड रीगन ने पद दस के युद्ध में विजय पाई, जो पद चालीस में सोवियत संघ के पतन का प्रतिरूप था। यशायाह 8:8 उसी युद्ध की पहचान करता है जो दानिय्येल ग्यारह के पद दस और चालीस में निरूपित है, और वे तीनों समांतर पद पद ग्यारह में वर्णित राफ़िया के युद्ध के विजेता के रूप में रूस की पहचान संभव करते हैं।

ग्यारहवीं आयत में राफ़िया का युद्ध दक्षिण के राजा (रूस) और पोपाई सत्ता की प्रतिनिधिक शक्ति (यूक्रेन) के बीच यूक्रेन के युद्ध का पूर्वचित्रण करता था। इस युद्ध की पहल ओबामा प्रशासन ने दक्षिणी गोलाद्ध से आने वाले प्रथम पोप के काल में की; जो अमेरिका महाद्वीप से आने वाले प्रथम पोप भी थे, यद्यपि वे दक्षिण अमेरिका से थे। "दक्षिण" वैश्वीकरण, आत्मवाद और साम्यवाद का प्रतीक है, और जब ग्यारहवीं आयत का युद्ध आया, तब अमेरिका महाद्वीप से आने वाले उस प्रथम दक्षिणी पोप ने वैश्वीकरणवादी राष्ट्रपति ओबामा के साथ स्वयं को संरेखित किया। दसवीं आयत में संयुक्त राज्य के रूप में रीगन ने एक रूढ़िवादी पोप के साथ एक गुप्त संधि की; तत्पश्चात, वैश्वीकरणवादी पोप के काल में, एक वैश्वीकरणवादी राष्ट्रपति द्वारा यूक्रेन के नाज़ियों को नियोजित किया गया। ट्रम्प के अधीन संयुक्त

राज्य अब प्रथम उत्तरी अमेरिकी तथा तथाकथित रूढ़िवादी पोप के साथ एक खुले संबंध में है।

पद दस के युद्ध में रीगन का बाइबिलीय भविष्यवाणी के मसीह-विरोधी के साथ एक गुप्त गठबंधन था, और ओबामा ने पद ग्यारह के युद्ध का आरंभ उस काल में किया, जब पोप भी ओबामा के समान वैश्ववादी था। ट्रंप अब रीगन के समानांतर एक पोप के साथ प्रकट संबंध में है, सिवाय इसके कि प्रारंभिक गुप्त गठबंधन अब एक खुला गठबंधन है। तीन पोप और तीन राष्ट्रपति, पद दस, ग्यारह और पंद्रह के तीन युद्धों के अनुरूप ठहरते हैं।

“अपनी चतुराई और कपटपूर्ण कौशल में रोमन कलीसिया अद्भुत है। वह आनेवाली बातों को पढ़ सकती है। वह अपने समय की प्रतीक्षा करती है, यह देखते हुए कि प्रोटेस्टेंट कलीसियाएँ झूठे सब्त को स्वीकार करके उसे सम्मान अर्पित कर रही हैं और वे उसी के प्रवर्तन की तैयारी उन्हीं साधनों द्वारा कर रही हैं जिन्हें वह स्वयं बीते हुए दिनों में काम में ला चुकी है। जो लोग सत्य के प्रकाश को अस्वीकार करते हैं, वे अभी इसी स्वयं-घोषित अचूक शक्ति की सहायता खोजेंगे, ताकि उस संस्था को ऊँचा उठाएँ जिसका उद्गम उसी से हुआ है। इस कार्य में वह प्रोटेस्टेंटों की सहायता करने के लिए कितनी तत्परता से आएगी, इसका अनुमान करना कठिन नहीं है। कलीसिया की आज्ञा का उल्लंघन करनेवालों के साथ कैसे व्यवहार करना है, इसे पोपीय अगुओं से बढ़कर और कौन समझता है?”

रोमन कैथोलिक कलीसिया, अपनी समस्त शाखाओं और विस्तारों सहित, जो समस्त संसार में फैली हुई है, पोपीय सिंहासन के नियंत्रणाधीन एक विशाल संगठन का रूप धारण करती है, और उसकी रचना पोपीय आसन के हितों की सेवा के लिए की गई है। उसके करोड़ों सदस्य, पृथ्वी के प्रत्येक देश में, इस प्रकार शिक्षा पाए हुए हैं कि वे अपने आपको पोप के प्रति निष्ठाबद्ध समझें। उनकी राष्ट्रीयता या उनकी सरकार चाहे जो भी हो, उन्हें कलीसिया के अधिकार को अन्य सभी अधिकारों से ऊपर मानना है। यद्यपि वे राज्य के प्रति अपनी निष्ठा की शपथ ले सकते हैं, तौभी इसके पीछे रोम के प्रति आज्ञाकारिता की वह प्रतिज्ञा निहित रहती है, जो उन्हें उसके हितों के प्रतिकूल प्रत्येक प्रतिज्ञा से मुक्त कर देती है।

इतिहास इस बात का साक्षी है कि उसने चतुराई और निरंतरता से राष्ट्रों के मामलों में अपनी पैठ बनाने के प्रयास किए; और एक बार पैर जमाने के बाद, अपने ही उद्देश्यों को आगे बढ़ाने के लिए, यहां तक कि राजकुमारों और जनता के विनाश की कीमत पर भी। सन् 1204 में, पोप इनोसेंट तृतीय ने आरागोन के राजा पीटर द्वितीय से निम्नलिखित असाधारण शपथ ली: 'मैं, पीटर, आरागोनियों का राजा, घोषणा करता और प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं अपने स्वामी, पोप इनोसेंट, उनके कैथोलिक उत्तराधिकारियों और रोमन कलीसिया के प्रति सदा निष्ठावान और आज्ञाकारी रहूँगा, और कैथोलिक विश्वास की रक्षा करते हुए तथा विधर्म की दुष्टता का उत्पीड़न करते हुए, उनके प्रति आज्ञाकारिता में अपने राज्य को निष्ठापूर्वक बनाए रखूँगा।' -जॉन डाउलिंग, रोमनिज़्म का इतिहास, पुस्तक 5, अध्याय 6, अनुभाग 55। यह रोमन धर्माध्यक्ष की शक्ति के संबंध में किए गए दावों के अनुरूप है कि 'उसके लिए सम्राटों को पदच्युत करना वैध है' और 'वह प्रजाजनों को अधर्मी शासकों के प्रति उनकी निष्ठा से मुक्त कर सकता है'। -मोशाइम, पुस्तक 3, शताब्दी 11, भाग 2, अध्याय 2, अनुभाग 9, टिप्पणी 17।

“और यह स्मरण रखा जाए कि रोम का यही गर्वोक्ति-पूर्ण दावा है कि वह कभी नहीं बदलती। ग्रेगरी VII और इन्नोसेंट III के सिद्धांत आज भी रोमन कैथोलिक कलीसिया के सिद्धांत हैं। और यदि उसके पास केवल शक्ति हो, तो वह उन्हें आज भी उतनी ही प्रबलता के साथ व्यवहार में ले आएगी जितनी गत शताब्दियों में लाई थी। प्रोटेस्टेंट बहुत कम जानते हैं कि वे क्या कर रहे हैं, जब वे रविवार के उत्कर्ष के कार्य में रोम की सहायता स्वीकार करने का प्रस्ताव रखते हैं। जबकि वे अपने उद्देश्य की सिद्धि पर तुले हुए हैं, रोम अपनी शक्ति को पुनः स्थापित करने, अपनी खोई हुई प्रभुता को फिर से प्राप्त करने का लक्ष्य साधे हुए है। संयुक्त राज्य में यदि एक बार यह सिद्धांत स्थापित हो जाए कि कलीसिया राज्य की शक्ति का उपयोग कर सकती है या उसे नियंत्रित कर सकती है; कि धार्मिक अनुष्ठानों को लौकिक विधियों द्वारा लागू कराया जा सकता है; संक्षेप में, कि कलीसिया और राज्य का अधिकार अंतःकरण पर प्रभुत्व करे, तो इस देश में रोम की विजय निश्चित है।”

परमेश्वर के वचन ने आसन्न संकट की चेतावनी दे दी है; यदि इसकी उपेक्षा की जाए, तो प्रोटेस्टेंट जगत को यह केवल तब ज्ञात होगा कि रोम के वास्तविक उद्देश्य क्या हैं, जब फंदे से निकलना बहुत देर हो चुकी होगी। वह निस्तब्धता से सत्ता में वृद्धि कर रही है। उसकी शिक्षाएँ विधान सदन में, कलीसियाओं में, और मनुष्यों के हृदयों में अपना प्रभाव डाल रही हैं। वह अपने ऊँचे और विशाल ढाँचों को खड़ा कर रही है, जिनके गुप्त अंतःस्थलों में उसके पूर्व के उत्पीड़न फिर से दोहराए जाएँगे। चुपके से और बिना किसी के भान के वह अपनी शक्तियों को सुदृढ़ कर रही है, ताकि जब प्रहार करने का समय आए तो अपने स्वयं के उद्देश्यों को आगे बढ़ा सके। उसे केवल एक अनुकूल स्थिति चाहिए, और यह उसे पहले ही दी जा रही है। हम शीघ्र ही देखेंगे और अनुभव करेंगे कि रोमी तत्त्व का अभिप्राय क्या है। जो कोई परमेश्वर के वचन पर विश्वास करेगा और उसका पालन करेगा, वह इसी कारण निन्दा और सताव का भागी होगा। *The Great Controversy*, 580, 581.

2016 में ट्रम्प निर्वाचित हुआ, तत्पश्चात् बाइडेन द्वारा प्रतिनिधित्व किए गए वैश्विकतावादियों ने 2020 का चुनाव चुरा लिया, परन्तु इसे केवल वे ही पहचानते हैं जिनकी 20/20 दृष्टि है। पद तेरह में डोनाल्ड ट्रम्प 2024 में "लौटता है", अब तक से अधिक सामर्थ्य के साथ, और स्वर्ण युग के लिए, तथा पद पंद्रह में पानियम के युद्ध के लिए, अपनी तैयारी आरम्भ करता है। तब 2025 में उस दर्शन को स्थापित करने हेतु पोप लियो आया, जो पद दस से पंद्रह तक वर्णित तीन युद्धों तथा उन युद्धों के तीन राष्ट्रपतियों से संबद्ध तीसरा पोप है। प्रथम और तृतीय पोप तथा राष्ट्रपति रूढ़िवादी माने जाते हैं, और मध्यवर्ती पोप तथा राष्ट्रपति वैश्विकतावादी थे। प्रथम संधि गुप्त थी, अन्तिम प्रकट है, क्योंकि पद चौदह में उसे अन्तिम दिनों की भविष्यवाणियों के बाह्य दर्शन की स्थापना करने वाले प्रतीक के रूप में निरूपित किया गया है।

31 दिसंबर, 2023 को प्रथम आज्ञा के कार्य के प्रतिरूप के रूप में प्रथम दूत का कार्य, नींव रखने से आरम्भ हुआ। आधारभूत परीक्षा इस बात पर थी कि पद चौदह में दर्शन की स्थापना करने वाला रोम ही है—इस पहचान में विलियम मिलर सही थे या गलत। अन्तिम दिनों के भविष्यसूचक दर्शन की स्थापना करने वाले प्रतीक के रूप में रोम की मिलर द्वारा की गई पहचान, कुछ दृष्टियों से, मिलर की सभी मूलभूत सत्यों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। मिलर कुछ समझों तक कैसे पहुँचे, यह केवल उनके समय और परिस्थितियों पर पवित्रीकृत तर्क का अनुप्रयोग करके ही निष्कर्षित किया जा सकता है, परन्तु उनकी कुछ भविष्यसूचक खोजों के विषय में यह बहुत विशिष्ट साक्ष्य उपलब्ध है कि वे अपनी उन समझों तक क्यों पहुँचे। उनकी सबसे मूलभूत समझ यह पहचान थी कि दर्शन की स्थापना रोम ही करता है।

मिलर सीधे साक्ष्य देते हैं कि उन्होंने यह समझने के लिए कैसे खोज की कि दानिय्येल की पुस्तक में जो 'हटा लिया गया' था, वह क्या था। वे न केवल यह बतलाते हैं कि उन्हें अपना उत्तर कहाँ मिला, बल्कि जब उन्होंने वह रत्न खोज लिया जिसकी वे तलाश कर रहे थे, तब अपने उत्साह का भी वर्णन करते हैं। अपोलोस हेइल ने मिलर की अपनी रचनाओं पर एक टीका लिपिबद्ध की है, और निम्नलिखित अनुच्छेद में हेइल यह स्पष्ट करते हैं कि मिलर भविष्यवाणी का विद्यार्थी कैसे बना। मिलर, उस ज्योति के संदेशवाहक के रूप में जिसकी मुहर 1798 में खोली गई, उन लोगों का एक पवित्र उदाहरण है जिन्हें दानिय्येल ने 'ज्ञानी' कहा है, जो पुस्तक की 'मुहर खुलने' पर 'समझते हैं'। मिलर का यह साक्ष्य कि उन्हें बाइबल का अध्ययन करने की ओर कैसे अग्रसर किया गया, उस एक के द्वारा दिया गया उद्देश्यपूर्ण उदाहरण है जो सब बातों को नियंत्रित करता है। मिलर के विकास पर ध्यान दें, क्योंकि वे उन 'ज्ञानी' का उदाहरण हैं जो 'ज्ञान की वृद्धि' को समझते हैं, चाहे वे, मिलर की ही भाँति, त्रुटि के अन्धकार में से बाहर ही क्यों न आए हों।

'मई सन् 1816 में, मैं पाप-बोध के अधीन आ गया, और ओह, किस भीषण भय ने मेरी आत्मा को भर दिया! मैं भोजन करना भूल गया। आकाश पीतल-सा प्रतीत हुआ, और पृथ्वी लोहा-सी। इसी दशा में मैं अक्टूबर तक बना रहा, जब परमेश्वर ने मेरी आँखें खोल दीं; और, हे मेरी आत्मा, मैंने यीशु को कैसा उद्धारकर्ता पाया! मेरे पाप मेरी आत्मा से बोझ के समान गिर पड़े: और तब पवित्रशास्त्र मुझे कितना स्पष्ट प्रतीत हुआ! वह संपूर्णतः यीशु ही के विषय में बोलता था; वह प्रत्येक पृष्ठ और प्रत्येक पंक्ति में उपस्थित थे। ओह, वह कितना सुखद दिन था! मैं सीधे स्वर्ग-गृह को चला जाना चाहता था; यीशु ही मेरे लिए सब कुछ थे, और मुझे लगा कि मैं सबको उसे वैसा ही दिखा सकूँगा जैसा मैंने उसे देखा, पर मैं भूल में था।

"जब मैं बारह वर्षों तक दैववादी था, उस अवधि में मैंने जितने भी इतिहास-ग्रंथ मुझे मिल सके, सब पढ़ डाले; पर अब मुझे बाइबल से प्रेम हो गया था। वह यीशु के विषय में शिक्षा देती थी! तथापि बाइबल का बहुत-सा भाग मेरे लिए अब भी अस्पष्ट था। 1818 या 1819 में, एक मित्र से वार्तालाप के समय—जिससे मैं मिलने गया था, और जो मुझे जानता था तथा जिसने मुझे दैववादी रहते हुए बोलते सुना था—उसने कुछ संकेतपूर्ण ढंग से पूछा, "इस पद और उस पद के विषय में तुम्हारा क्या विचार है?" अर्थात् वे पुराने पद जिन पर मैंने दैववादी रहते आपत्ति की थी। मैं समझ गया कि उसका आशय क्या है, और उत्तर दिया—"यदि तुम मुझे समय दोगे, तो मैं तुम्हें उनका अर्थ बता दूँगा।" "तुम्हें कितना समय चाहिए?" "मुझे नहीं पता, पर मैं तुम्हें बता दूँगा," मैंने उत्तर दिया; क्योंकि मैं यह मान नहीं सकता था कि परमेश्वर ने ऐसी प्रकाशना दी है जिसे समझा न जा सके। तब मैंने अपनी बाइबल का अध्ययन करने का निश्चय किया, यह विश्वास करते हुए कि मैं जान सकूँगा कि पवित्र आत्मा का आशय क्या है। परंतु जैसे ही मैंने यह निश्चय किया, मेरे मन में यह विचार आया—"यदि मान लो तुम्हें कोई ऐसा अंश मिले जिसे तुम समझ न सको, तो तुम क्या करोगे?"

तब बाइबल का अध्ययन करने की यह विधि मेरे मन में आई: मैं ऐसे अंशों के शब्दों को लूँगा, और उनका अनुगमन बाइबल भर में करूँगा, और इस प्रकार उनके अर्थ का पता लगाऊँगा। मेरे पास कूडन का कॉनकॉर्डन्स [1798 में क्रय किया] था, जिसे मैं संसार में सर्वोत्तम मानता हूँ; सो मैंने उसे और अपनी बाइबल ली, और मेज़ पर बैठ गया, और समाचारपत्रों को थोड़ा-बहुत छोड़कर और कुछ न पढ़ा, क्योंकि मैंने यह ठान लिया था कि अपनी बाइबल का आशय जानूँगा। मैंने उत्पत्ति से आरम्भ किया, और धीरे-धीरे पढ़ता गया; और जब मैं ऐसे किसी पद पर पहुँचा जिसे मैं समझ न सका, तो उसका अर्थ जानने के लिए मैंने बाइबल भर में खोज-बीन की। जब मैंने इस प्रकार सारी बाइबल का अध्ययन कर लिया, ओह, सत्य कितना उज्ज्वल और महिमामय प्रतीत हुआ! मैंने वही पाया जिसका मैं आप सबको उपदेश देता आया हूँ। मैं इस बात से आश्चस्त हो गया कि 'सात समय' का अंत 1843 में हुआ। फिर मैं 2300 दिनों पर पहुँचा; उन्होंने मुझे उसी निष्कर्ष तक पहुँचा दिया; परन्तु उद्धारकर्ता कब आएँगे, यह जानने का मेरे मन में कोई विचार न था, और मैं इस पर विश्वास भी नहीं कर पा रहा था; परन्तु ऐसा प्रबल प्रकाश मुझ पर पड़ा कि मुझे समझ नहीं आया कि क्या करूँ। अब, मैंने सोचा, मुझे स्पर्स और ब्रीचिंग पहन लेनी चाहिए; न मैं बाइबल से आगे बढ़ूँगा, न उससे पीछे रहूँगा। बाइबल जो कुछ सिखाती है, मैं उसी को दृढ़तापूर्वक थामे रहूँगा। फिर भी कुछ पद ऐसे थे जिन्हें मैं समझ नहीं सका।

बाइबल का अध्ययन करने की उसकी सामान्य पद्धति के विषय में इतना ही। एक अन्य अवसर पर उसने हमारे समक्ष प्रस्तुत इस पाठ—'नित्य'—के अर्थ का निश्चय करने की अपनी पद्धति बताई: 'मैं पढ़ता गया,' उसने कहा, 'और दानियेल के सिवा किसी अन्य स्थान पर इसका कोई और उदाहरण न पाया। तब मैंने वे शब्द लिये जो इसके साथ जुड़े हुए थे—"हटा देना": "वह नित्य को हटा देगा," "उस समय से जब नित्य हटा दिया जाएगा," इत्यादि। मैं आगे पढ़ता गया, और मुझे लगा कि इस पाठ पर मुझे कोई प्रकाश न मिलेगा; अन्ततः मैं 2 थिस्सलुनीकियों 2:7-8 पर पहुँचा: "क्योंकि अधर्म का भेद तो अब ही काम कर रहा है; केवल जो अब रोकता है, वही रोकता है, जब तक कि वह बीच से हटा न दिया जाए; और तब वह अधर्मी प्रगट होगा," इत्यादि। और जब मैं उस पाठ पर पहुँचा, ओ, सत्य कितना स्पष्ट और गौरवमय प्रतीत हुआ! वहीं है! वही "नित्य" है! तो अब, पौलुस "जो अब रोकता है," या बाधा डालता है, से क्या अभिप्राय करता है? "पाप का मनुष्य" और "वह अधर्मी" से अभिप्राय पोपवाद है। तो, पोपवाद के प्रगट होने में बाधा क्या है? क्यों, वह तो मूर्तिपूजकता है; तो फिर, "नित्य" का अर्थ अवश्य मूर्तिपूजकता ही होगा।' एपोलोस हेल, *The Second Advent Manual*, 66.

मानवीय तथा दिव्य—दोनों—के द्वारा मिलर के अध्ययन का ईश्वरीय प्रबन्ध के अधीन मार्गदर्शन अभिलेख में विद्यमान है। उसके पुराने मित्र ने उसे प्रेरित किया, और जो विचार उसके मन में आए वे स्वर्गदूत गैब्रियल की वाणी थे, जिसे सिस्टर वाइट "line upon line" इस प्रकार पहचानती हैं कि वही स्वर्गदूत बारंबार मिलर से मिलने आता रहा। वह सात समय को अपनी पहली खोज ठहराता है, और फिर 2,300 को सात समय के दूसरे साक्षी के रूप में ठहराता है, क्योंकि वे दोनों 1843 में समाप्त हुए, (ऐसा वह प्रारम्भ में मानता था)। ये दो भविष्यवाणियाँ उसकी "अल्फ़ा" और "ओमेगा" खोज हैं, और मिलर के साथ इनके भविष्यसूचक सम्बन्ध के भीतर, इन्हीं के द्वारा उस भूल की पहचान होती है, जिसे सैमुअल स्नो द्वारा "Midnight Cry" के संदेश से सुधारा जाना था, जिसने "सातवें महीने के

आंदोलन" का आरम्भ किया। "Midnight Cry" का आंदोलन "सातवें महीने का आंदोलन" था, जब वह एक्सेटर शिविर-सभा से निकला, क्योंकि वह सातवें महीने के दसवें दिन प्रभु के आगमन को चिन्हित कर रहा था, जो 1844 में 22 अक्टूबर को पड़ा।

दूसरे स्वर्गदूत के सशक्तिकरण को उत्पन्न करनेवाली भूल का निरूपण मिलर की प्रारम्भिक समझ से होता है कि 'सात समय' और 2,300 वर्ष 1843 में साथ-साथ समाप्त हुए। उस अनुच्छेद में अगला जो सिद्धान्त विवेचित है, वह यह है कि मिलर इस निष्कर्ष पर कैसे पहुँचे कि रोम वह प्रतीक है जो दर्शन की स्थापना करता है। एडवेंटिस्ट इतिहास के अध्यापक यह प्रतिपादित करते हैं कि विलियम मिलर की समस्त भविष्यद्वाणीगत समझ इस बात पर आधारित थी कि उन्होंने दो उजाड़नेवाली शक्तियों की पहचान की थी। वे उन दो उजाड़नेवाली शक्तियों को मूर्तिपूजक (पैगन) रोम और पोपीय (पापल) रोम समझते थे, और जब उन्होंने यह जाना कि दानिय्येल की पुस्तक में 'daily' से आशय मूर्तिपूजक रोम है, तब उन्होंने उन दोनों शक्तियों को 2 थिस्सलुनीकियों में देखा। सिस्टर वाइट हमें बताती हैं कि स्वर्गदूत बार-बार मिलर से मिलने आए; मिलर द्वारा प्रतिपादित प्रत्येक भविष्यद्वाणीगत प्रतिरूप इसी समझ पर आधारित था कि रोम दर्शन की स्थापना करता है। प्रत्येक!

31 दिसंबर, 2023 से यहूदा के गोत्र का सिंह यीशु मसीह के प्रकाशितवाक्य पर लगी मुहरें खोल रहा है। उसी समय से आधारभूत परीक्षा आरंभ हो गई थी, और जब 8 मई, 2025 को संयुक्त राज्य अमेरिका से प्रथम पोप ने अपना पोपत्व आरंभ किया, तब वह अपनी परिणति को प्राप्त हुई। उसी समय मंदिर-परीक्षा आरंभ हुई।

हम अगले लेख में इन बातों को आगे बढ़ाएँगे और "250" वर्षों को साक्षी ठहराकर अपनी इस पहचान का समर्थन करेंगे कि आधारभूत परीक्षा का समापन वर्तमान पोप के साथ हुआ।